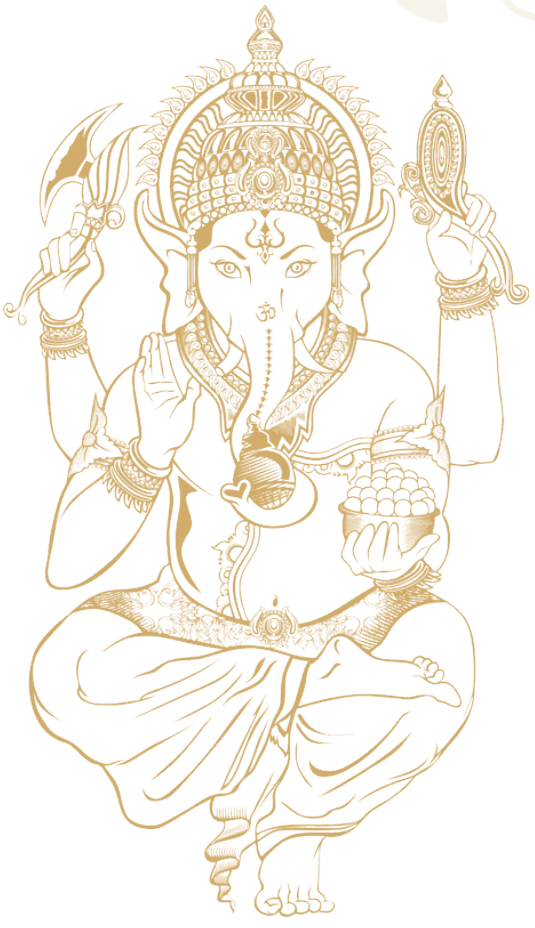

Ravindra singh Rajawat

Ranika

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119255407

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
24-25/12/1997 :	जन्म तिथि	: 4-05/11/1999
बुध-गुरुवार :	दिन	: गुरु-शुक्रवार
घंटे 02:30:00 :	जन्म समय	: 05:15:00 घंटे
घटी 48:04:51 :	जन्म समय(घटी)	: 56:22:48 घटी
India :	देश	: India
Nasirabad :	स्थान	: Churu
26:18:00 उत्तर :	अक्षांश	: 28:18:00 उत्तर
74:44:00 पूर्व :	रेखांश	: 75:00:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:31:04 :	स्थानिक संस्कार	: -00:30:00 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
07:16:03 :	सूर्योदय	: 06:43:30
17:45:21 :	सूर्यास्त	: 17:43:30
23:49:39 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:51:02

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
राहु 11वर्ष 2मा 26दि		05:43:19	तुला	लग्न	कन्या	28:10:28	चन्द्र 8वर्ष 2मा 25दि	
शनि		09:15:58	धनु	सूर्य	तुला	18:15:22	राहु	
21/03/2025		11:40:32	तुला	चंद्र	कन्या	12:21:09	30/01/2015	
21/03/2044		11:20:23	मक	मंगल	धनु	20:02:29	29/01/2033	
शनि	24/03/2028	23:47:59	वृश्चिक व	बुध	वृश्चिक	07:52:28	राहु	12/10/2017
बुध	02/12/2030	26:58:18	मक	गुरु व	मेष	04:27:16	गुरु	06/03/2020
केतु	11/01/2032	10:01:44	मक	शुक्र	कन्या	01:50:57	शनि	11/01/2023
शुक्र	13/03/2035	19:46:18	मीन	शनि व	मेष	19:58:40	बुध	31/07/2025
सूर्य	23/02/2036	19:40:26	सिंह व	राहु व	कर्क	14:24:44	केतु	18/08/2026
चन्द्र	23/09/2037	19:40:26	कुंभ व	केतु व	मक	14:24:44	शुक्र	18/08/2029
मंगल	02/11/2038	12:55:05	मक	हर्ष	मक	19:04:51	सूर्य	13/07/2030
राहु	08/09/2041	04:51:40	मक	नेप	मक	07:52:17	चन्द्र	12/01/2032
गुरु	21/03/2044	12:41:07	वृश्चिक	प्लूटो	वृश्चिक	15:25:56	मंगल	29/01/2033

लग्न-चलित

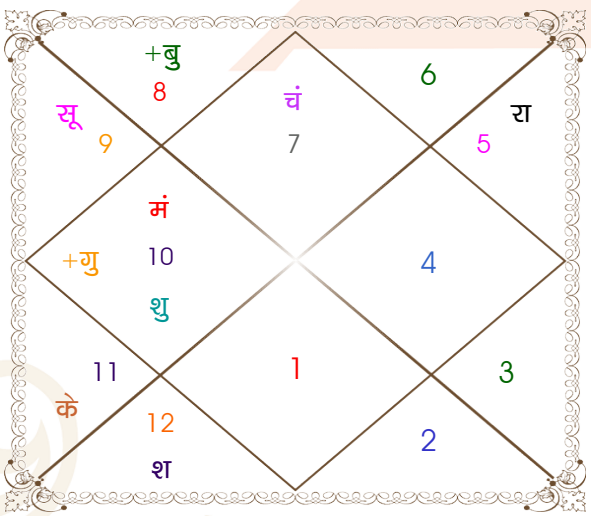

लग्न-चलित

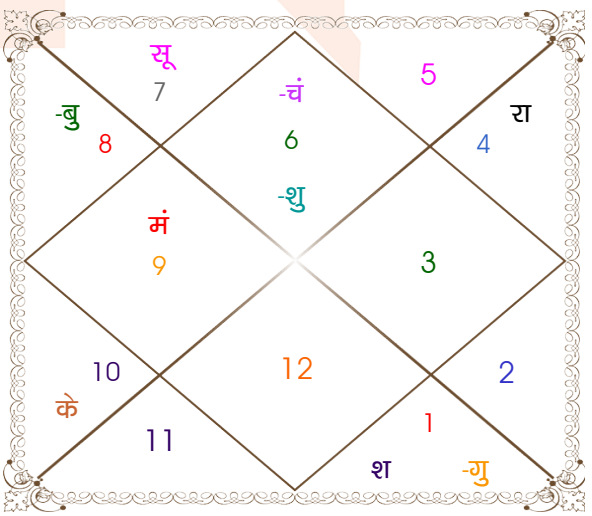

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	महिष	महिष	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	कन्या	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

त्ंअपदकत्ं`पदही त्ंूंज का वर्ग मृग है तथा त्ंदपां का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार त्ंअपदकत्ं`पदही त्ंूंज और त्ंदपां का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

त्ंअपदकत्ं`पदही त्ंूंज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल त्ंअपदकत्ं`पदही त्ंूंज कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु त्ंअपदकत्ं`पदही त्ंूंज कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्ंदपां मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु त्ंदपां कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु त्ंअपदकतं पदही त्ंूंज कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्ंअपदकतं पदही त्ंूंज तथा त्ंदपां में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।